"संस्कार जागृति मिशन" को समर्पित

!! ओ३म् !!

अंक-05 वर्ष-01, अगस्त 2019 (मासिक)

एक कदम संस्कारों की ओर

संस्कार जागृति

मासिक डिजीटल (ऑन लाइन) पत्रिका

सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

संस्कार जागृति

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

(भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रही संस्था 'संस्कार जागृति मिशन' को समर्पित डिजीटल पत्रिका)

अंक-05 वर्ष-01, संवत्सर 2076 अगस्त 2019 (मासिक)

मार्गदर्शक
आचार्य सत्यप्रिय आर्य
डा.अर्चना प्रिय आर्य

संपादक
विवेक प्रिय आर्य

सृष्टि संवत्
1960853120

कार्यालय
संस्कार जागृति मिशन
52, ताराधाम कॉलोनी
नियर पुष्पांजलि द्वारिका
टाउनशिप (मथुरा) उ.प्र.

दूरभाष
09719910557
09719601088
09058860992

अनुक्रमणिका

लेख-कविता — पृष्ठ संख्या

वेदवाणी............03
सम्पादकीय............04-05
जो शहीद हुए है उनकी जरा याद करो कुर्बानी............06-07
कवि की कलम से............08
सांच को आंच नहीं............09
मेहनत का फल अवश्य मिलता है......... 10
स्वास्थ्य चर्चा............11
संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां............12-15
विज्ञापन............16

'संस्कार जागृति' पत्रिका प्राप्त करने के लिए

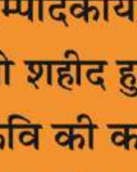

अपनी ई-मेल आईडी व व्हाट्सएप नम्बर हमें भेजें........09719910557

वेद वाणी

हम अबोध बालकों की सदा रक्षा करें

वेद मंत्र

ओ३म् स नः पितेव सूनवेऽग्नें सूपायनो भव। सचस्वा न : स्वस्तये।।

-ऋ० १।१।६।

ऋषिः-**मधुच्छन्दाः**।। देवता-**अग्निः**।। छन्दः-**गायत्री**।।

विनय

संसार में जिनके द्वारा हमारा जन्म होता है उन्हें हम पिता कहते हैं, और जो भी वृद्ध पुरूष, गुरू आदि होते हैं वे भी हमारा उत्कृष्ट पालन करने वाले होने से पिता कहलाते हैं, परन्तु हे अग्रें ! हम सभी को कभी-न-कभी अनुभव हो जाता है कि हमारे असली पालक पिता तो एकमात्र तुम्ही हो। एक समय आता है जब सांसारिक पिता भी वैसे ही रोते खड़े रह जाते हैं और हमारी पालना, रक्षा नहीं कर सकते। सचमुच संसार के वासी हम सब-सांसारिक पिता व पुत्र के सब-के-सब तेरे एक-समान पुत्र हैं। हे हम सबके पितः ! हे परमपितः ! जब हम सब तेरे पुत्र हैं तब हमारी आप तक सदा पहुंच क्यों नहीं होती? पुत्र का तो यह अधिकार है कि जब चाहे पिता के पास पहुंच सके। जब इस संसार में और कोई हमारी रक्षा कर सकने वाला है ही नहीं, हमारा दु:खड़ा सुन सकने वाला है ही नहीं, तो हे पितः ! हम और कहां जाएं? तू तो हमारे लिए 'सु उपायन' रह, सुगमता से पहुंच सकने वाला हो। हे एकमात्र पितः ! हम जिस समय चाहें, जिस स्थान पर चाहें तुझे मिल सकें-अपना दु:ख सुना सकें- अपनी बाल-कामनाएं पूरी करा सकें। हम बच्चों की तुमसे यही प्रार्थना है, यही याचना है।

हमारा कल्याण किसमें है, यह भी हम अबोध बालक क्या जानें ! जो हमें अकल्याण दिखाई देता है पीछे पता लगता है कि वही हमारा कल्याण था। हे पितः ! तुम्ही जानते हो कि हम बच्चों का कल्याण किसमें है। बस, तुम्ही हमारी स्वस्ति के लिए, कल्याण के लिए हमें-अपने बच्चों को सेवित करो, पालो-पोसो। हम तुम्हारे बच्चे हैं ! हम तुम्हारे बच्चे हैं !!

शब्दार्थ

अग्रें- हे प्रभो ! हे अग्रें ! **सः**- वह तुम पिता सूनवे **इव**- पिता की भांति मुझ पुत्र के लिए **सु उपायनः**- सुगमता से पहुंचने योग्य **भव**- होओ और **स्वस्तये**- कल्याण के लिए **नः**- हमें **सचस्व**-सेवित करो।

('आचार्य अभयदेव जी' की पुस्तक 'वैदिक विनय' से)

आपके विचार व सुझाव आमंत्रित हैं

प्रिय साथियों आप भी अपने सुझाव, विचार, लेख, कविता, स्वास्थ्य चर्चा हमें भेज सकते हैं, जिन्हें हम अपने अगले अंक में प्रकाशित कर सकें। हमें आपकी प्रतीक्षा रहेगी।

E-Mail : sanskarjagratimission@gmail.com 09719910557

सम्पादकीय महर्षि दयानंद ने डाली थी स्वतंत्रता संग्राम की नींव

विवेक प्रिय आर्य
(सम्पादक)

...........महर्षि दयानंद सरस्वती ने राष्ट्रवादी विचारधारा को आगे बढ़ाने में उल्लेखनीय योगदान दिया। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज शिक्षा, समाज-सुधार एवं राष्ट्रीयता का आन्दोलन था। स्वतंत्रता पूर्व काल में हिंदू समाज के नवजागरण और पुनरुत्थान आंदोलन के रूप में भी आर्यसमाज सर्वाधिक शक्तिशाली आवाज था। यह पूरे पश्चिम और उत्तर भारत में सक्रिय था तथा सुप्त हिन्दू जाति को जागृत करने में संलग्न था। आर्यसमाज ऐसा संगठन है, जिसके द्वारा धर्म, समाज और राष्ट्र तीनों के लिए अभूतपूर्व कार्य किए गए हैं। आर्यसमाज किसी मत, मजहब व पंथ का नाम नहीं है, जबकि आर्यसमाज एक सुधार, एक आन्दोलन का नाम है। आर्यसमाज के अनुयायियों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में बढ-चढ कर भाग लिया। भारत के 85 प्रतिशत स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आर्यसमाज ने पैदा किये थे। स्वदेशी आन्दोलन का मूल सूत्रधार ही आर्यसमाज था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर भी आर्यसमाज के प्रभाव से ही स्वदेशी आन्दोलन आरम्भ हुआ था। महर्षि दयानंद सरस्वती आधुनिक भारत के धार्मिक नेताओं में प्रथम महापुरूष थे, जिन्होंने स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया। स्वामी जी ने धर्म परिवर्तन कर चुके लोगों को पुनः अपने वैदिक धर्म में वापिसी के लिए प्रेरणा देकर शुद्धि आंदोलन चलाया था। आर्य समाजियों ने सबसे बड़ा काम जाति व्यवस्था को तोड़ने और सभी हिन्दुओं में समानता का भाव जागृत करने का किया। भारतीयों में भारतीयता को अपनाने, प्राचीन संस्कृति को मौलिक रूप में स्वीकार करने, पश्चिमी प्रभाव को विशुद्ध भारतीयता यानी वेदों की ओर लोटो के नारे के साथ समाप्त करने तथा सभी भारतीयों को एकताबद्ध करने के लिए प्रेरित करने का काम आर्यसमाज ने किया। आर्यसमाज मानव मात्र की उन्नति करने वाला संगठन है, जिसका उद्देश्य शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना है। वह अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति मानता है।

भारत को आजाद कराने में महर्षि दयानन्द सरस्वती को प्रथम पुरोधा कहा गया। उनके द्वारा ही सन् 1857 में भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की नींव डाली गयी थी और अंग्रेज शासन के विरुद्ध जनजागरण प्रारम्भ कर दिया था। सन् 1857 की क्रांति के विफल हो जाने पर महर्षि दयानन्द ने तात्कालिक परिस्थिति के अनुसार अपना मार्ग बदलकर भाषण और लेखन द्वारा सर्वविध क्रांति प्रारम्भ की। महर्षि दयानन्द ही वह पहले भारतीय हैं जिन्होंने अंग्रेजों के साम्राज्य में सर्वप्रथम स्वदेशी राज्य की मांग की थी। वे अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं - ''कोई कितना ही करे जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि, उत्तम होता है। सन् 1870 में लाहौर में विदेशी कपड़ो की होली जलाई। स्टाम्प ड्यूटी व नमक के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा परिणाम स्वरूप आर्यसमाज के अनेक कार्यकर्ता व नेता स्वतन्त्रता संग्राम में देश को आजाद करवाने के लिए कूद पड़े। सन् 57 के पश्चात की क्रांति के जन्मदाता महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके शिष्य पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा (जो क्रांतिकारियों के गुरु थे), प्रसिद्ध क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, सेनापति बापट, मदनलाल ढींगरा, रामप्रसाद बिस्मिल, गोपाल कृष्ण गोखले, सरदार भगत सिंह इत्यादि...(शेष पेज 05 पर)

पृष्ठ 04 का शेष....

सम्पादकीय : महर्षि दयानंद ने डाली थी स्वतंत्रता संग्राम की नींव

...........शिष्यों ने स्वाधीनता आन्दोलन में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। इंग्लैण्ड में भारत के लिए जितनी क्रांति हुई वह श्याम जी कृष्ण वर्मा के ''इण्डिया हाउस'' से ही हुई। सरदार भगत सिंह तो जन्म से ही आर्य समाजी थे। इनके दादा सरदार अर्जुन सिंह विशुद्ध आर्य समाजी थे और इनके पिता श्री किशन सिंह भी आर्य समाजी थे। गांधी जी जब अफ्रीका से लौटकर भारत आये तब उनको ठहराने का किसी में साहस न था। तब आर्यसमाजी नेता स्वामी श्रद्धानंद ने ही उनको गुरुकुल कांगड़ी में ठहराया था और गांधी जी को महात्मा गांधी की उपाधि से सुषोभित भी स्वामी श्रद्धानंद जी ने ही किया था। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व लगभग सभी स्थानों में ऐसी स्थिति थी कि कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्ताओं को यदि कहीं आश्रय, भोजन, निवास आदि मिलता था, तो वह किसी आर्य के घर में ही मिलता था। जब-जब सनातन धर्म पर कोई आक्षेप लगाए गये, महापुरुषों पर किसी ने कीचड़ उछाला तो ऐसे लोगों को आर्यसमाज ने ही जवाब देकर चुप किया है। हैदराबाद निजाम ने सांप्रदायिक कट्टरता के कारण हिन्दू मान्यताओं पर 16 प्रतिबंध लगाए थे जिनमें धार्मिक, पारिवारिक, सामाजिक रीति रिवाज सम्मिलित थे। सन् 1937 में पंद्रह हजार से अधिक आर्यसमाजी जेल गए और तीव्र आंदोलन किया, कई शहीद हो गए। निजाम ने घबराकर सारी पाबन्दियाँ हटा लीं, जिन व्यक्तियों ने आर्यसमाज के द्वारा चलाये आंदोलन में भाग लिया, कारागार गए उन्हे भारत शासन द्वारा स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों की भांति सम्मान देकर पेंशन दी जा रही है। अमृतसर (पंजाब) में कांग्रेस का अधिवेशन करवाने का साहस अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी में ही था। उस समय की स्थिति को देखकर किसी भी कांग्रेसी में इतना साहस न था जो सम्मुख आता और कांग्रेस का अधिवेशन करवा सकता। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता थे उनकी देशभक्ति किसी से तिरोहित नहीं। सन् 1983 में दक्षिण भारत मीनाक्षीपुरम में पूरे गाँव को मुस्लिम बना दिया गया था। शिव मंदिर को मस्जिद बना दिया गया था। सम्पूर्ण भारत से आर्यसमाज के द्वारा आंदोलन किया गया और वहाँ जाकर हजारों आर्य समाजियों ने शुद्धि हेतु प्रयास किया और पुनः सनातन धर्म में सभी को दीक्षित किया, मंदिर की पुनः स्थापना की। कश्मीर में जब हिंदुओं के मंदिर तोड़ना प्रारम्भ हुआ तो उनकी ओर से आर्य समाज ने प्रयास किया और शासन से 10 करोड़ का मुआवजा दिलवाया। स्वतन्त्रता आंदोलनकारियों के सर्वेक्षण के अनुसार स्वतन्त्रता के लिए 80-85 प्रतिशत व्यक्ति आर्यसमाज के माध्यम से आए थे। इसी बात को काँग्रेस के इतिहासकार डा0 पट्टाभि सीतारमैया ने भी लिखा है।

(विवेक प्रिय आर्य)

सम्पादक : संस्कार जागृति (डिजीटल पत्रिका)

सभी देशवासियों को

स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

आपका अपना

वीरेन्द्र कुमार गौतम

(प्रमुख उद्योगपति, भावनगर, गुजरात)

''जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी''

लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य, अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

डा० अर्चना प्रिय आर्य
एम.ए. (संस्कृत/हिंदी)
बी.एड., पीएच.डी.

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में हजारों नौजवानों ने अपने अमूल्य जीवन की आहुतियाँ देकर भारत माता को आजाद कराया था। वह दीर्घकाल तक जेलों में रहे, यातनायें सहीं फाँसी पर चढ़े, काला पानी भेजे गये, देश निकाला हुआ। जब जाकर ये देश स्वतन्त्र हुआ। ये शहीद बलिदानी वीर भारतीय स्वतन्त्रता की नींव के पत्थर हैं। उन्हीं के बलिदान के कारण आज हम आजादी का परम सुख भोग रहे हैं। स्वतन्त्रता जिनकी महान तपस्या, त्याग और बलिदान का फल है उन्हीं शहीदों को आज हम भुलाते जा रहे हैं। जिन शहीदों के खून पर तैरकर आजादी आयी है उन शहीदों को हमें भुलाना नहीं है। किसी कवि ने उन शहीदों की याद करते हुये लोगों को सम्बोधित किया है -

जो शहीद हुये हैं उनकी, जरा याद करो कुर्बानी।

अहा! कैसी अनौखी कुर्बानी थी उन शहीदों की। अपने देश की आन, वान, शान के लिए महाराणा प्रताप सुख-आराम छोड़कर जंगलों में भटकते फिरे, जिसके मासूम बच्चे रोटी के टुकड़ों के लिए तरसते रहे, जिसने अकबर से कहा था-

खाऊँ न परतन्त्रता की स्वर्ण की मैं थालियों में। भले हैं, स्वतन्त्रता के दोना ढाक पात के।।

रामप्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जले में 19 दिसम्बर 1927 को फाँसी दी गई। फाँसी दिये जाने से पहले मिलने आये देशवासियों ने बिस्मिल से पूछा- तुम्हारी कोई स्मरण समाधि बनवा दें? बिस्मिल ने उन्हें सम्बोधित करते हुये कहा था-

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर वर्ष मेले। वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशाँ होगा।।

फाँसी दिये जाने से पहले जज ने आखिरी इच्छा पूछी तो बिस्मिल ने कहा- 'मैं अंग्रेजी राज्य का नाश चाहता हूँ।' उन्होंने फांसी पर चढ़ने से पहले कहा था-

यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्रों बार भी। तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊँ कभी।।
हे ईश भारतवर्ष में शतवार मेरा जन्म हो। कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारी कर्म को।।

अपने अन्य साथियों में लाहिणी तथा अशफाक उल्ला खाँ का उल्लेख करते हुये बिस्मिल ने उनके बलिदान के विषय में लिखा था-

मरते बिस्मिल, रोशन, लाहिणी, अशफाक अत्याचार से। होंगे पैदा सैकड़ों इनके रूधिर की धार से।।

इस प्रकार भगतसिंह ने भी अंग्रेजों को ललकारते हुये कहा था-

हमारे भी खूं का असर देख लेना। मिटा देंगे जालिम का घर देख लेना।
किसी के इशारे के हम मुन्तजिर हैं। बहा देंगे खूं की नदी देख लेना।।

इस प्रकार अनेक ऐसे युवक थे जिनका शस्त्रों पर अधिक विश्वास था। जो फॉसी के फन्दे को मृत्यु रूपी दुल्हन की जयमाला समझते थे। देश के लिए लड़ मरना ही जिनका उद्देश्य था। जेल ही जिनका स्वर्ग था व पिस्तोल ही चिर संगिनी थी। जो भूख से तिल-तिल कर प्राण तो दे सकते थे परन्तु झुकना उन्हें मंजूर न था। ये लोग गोलियों के सावन में रहने के अभ्यस्त हो चुके थें। राष्ट्र के गौरव की रक्षा के लिए, राष्ट्र की स्वतन्त्रता और सम्मान के लिए अपने और अपने परिवार के हितों को बलिदान करने वाले नरपुंगव ही अमर हैं। ....(शेष पेज 07 पर)

पृष्ठ 06 का शेष.... ''जो शहीद हुए है उनकी जरा याद करो कुर्बानी'' (लेखक : डा0 अर्चना प्रिय आर्य)

..........वीर लक्ष्मण बन्दा बैरागी के नाम से अमर हो गये। जीवन भर वे स्वदेश-स्वजाति के लिए जूझते रहे। अत्याचारी मुस्लिम शासकों के छक्के छुड़ा दिये। पर अन्त में साधन-शून्य होने पर ये पकड़े गये। इनके इकलौते पुत्र का शिर भाले से छेदकर इनकी छाती पर दे मारा गया जलते हुये सँडासों से स्थिरप्रज्ञ का मांस नोचा जा रहा था। निकलते हुये रक्त के फब्बारे से अंजलि भरकर ये बार-बार रक्त को अपने मुख से लपेटते हैं। किसी ने पूछा-बन्दा यह तुम क्या कर रहे हो? वीर बन्दा का उत्तर था- 'शरीर से रक्त निकलने के कारण चेहरे पर लाली का न रहना स्वभाविक है, मैं यह लाल-लाल रक्त इसलिए लपेट रहा हूं ताकि मातृभूमि के लिए बलिदान देते समय मेरे चेहरे की लाली बनी रहे, फीकापन न दिखाई पड़े।' धन्य हो राष्ट्रवीर-मृत्युंजयी बन्दा!

आर्यसमाज के रूप में महर्षि दयानन्द ने जो ज्वाला प्रज्वलित की, उससे जन-जागरण का महत्वपूर्ण कार्य हुआ। महर्षि के देशभक्त शिष्यों ने कांग्रेस में प्रवेश कर उस मंच को देशभक्ति का आमन्त्रण एवं कार्यक्रम देने का साधन बना कर कुटनीतिक क्षेत्र में अंग्रेजों को करारी मात दे दी। आर्यसमाज के माध्यम से 1921 के असहयोग आन्दोलन (जिसका बीज महर्षि इससे लगभग 80 वर्ष पूर्व बो गये थे) प्रकट हुआ, कांग्रेसी नेताओं के सर्वेक्षण के अनुसार 70 प्रतिशत आर्यसमाजी जेल में गये। इसी को माध्यम बनाकर 1931 का 'नमक कानून भंग सत्याग्रह' (इसका बीज भी महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के 1875 वाले प्रथम संस्करण में बड़े स्पष्ट शब्दों में डाल दिया था) चलाया गया था जिसमें चोटी के कांग्रेसी नेताओं की रिपोर्ट के अनुसार लगभग 80 प्रतिशत आर्यसमाजियों ने भाग लिया। 1857 के पश्चात् महर्षि ने स्वाधीनता का बीज बोया। उसे ही अनुयायियों ने आर्यसमाज तथा काँग्रेस के मंच से अपना खून पसीना देकर सींचा जो 15 अगस्त 1957 को स्वाधीनता के फल के रूप में हुआ।

सुभाषचन्द्र बोस जिन्होंने कहा था कि भारत को आजाद करने के लिए अंतिम सांस तक एक सिपाही की तरह लड़ता रहूंगा। मैं सदा भारत का सेवक रहूंगा और भारत का हित मेरे जीवन का एक मात्र लक्ष्य रहेगा। स्वतन्त्रता मिल जाने के उपरान्त भी जब कभी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए मेरी जरूरत होगी, तो मैं अपने रक्त की एक-एक बूँद मॉ के चरणों पर चढ़ा दूँगा। जिन्होंने लोगों से कहा था कि-

'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।'

1857 की क्रान्ति की वह स्वनाम धन्या लक्ष्मीबाई एक दिन जब झॉसी के किले से अश्वारूढ़ हो निकलीं तो कोई भी शक्ति कोई भी मोह-ममत्व उसे लौटा नहीं पाया। बारूद की वर्षा में, आग्नेय आंधियों तथा शत्रु-सैन्य के समुद्र-ज्वार में वह निर्बाध बढ़ती चली और गोरों के मुण्डों की माला लम्बी होती गयी। दामोदर चापेकर, बालकृष्ण और 10 वर्ष की अवस्था वाले सबसे छोटे भाई देवव्रत चापेकर इन तीनों चापेकर बन्धुओं के एक ही दिन एक साथ फॉसी के तख्ते पर चढ़ गये। यह देश ऐसे बहादुर बच्चे, नारियों पुरूषों के बलिदान को भुला नहीं सकेगा। किसी कवि ने बड़ा सुन्दर लिखा है-

याद शहीदों की जब आती, आसू भर-भर आते,
जो मर गये देश की खातिर, उनको शीश झुकाते।
कैसे थे वे लोग जिन्होंने, घर से रिश्ता तोड़ा,
पत्नी छोड़ी, संपति छोड़ी, पुत्र विलखता छोड़ा।।

''संस्कार जागृति मिशन'' की ओर से
को ''स्वतंत्रता दिवस'' की हार्दिक शुभकामनाएं

कवि की कलम से

मुक्तक

रचियता
कवि राज सिंह
सहायक आयुक्त पुलिस,
दिल्ली (सेवा निवृत्त)

पतझड़ और बसंत का चक्र चल रहा साथ।
रजनी बाट निहारती, आयेगा सुप्रभात।।
आयेगा सुप्रभात, अंधेरा मिट जायेगा।
क्षुधा निरन्तर नहीं, अचिर भोजन पायेगा।।
अनाव्रष्टि चिरकाल, वहां भी मेघ बरसते।
सुख दु:ख के आयाम चक्र की भांति बदलते।।

सहता दु:ख महात्मा, समझ लीजिए मर्म।
सत्कर्मो के मध्य में हुआ उदय दुष्कर्म।।
हुआ उदय दुष्कर्म, पूर्व जन्मों का खाता।
जाने अनजाने में जो अपराध हुआ था।।
बने राज ऋषि किन्तु जीव का कर्म सुनिश्चित रहता।
अच्छे बुरे कर्म के फल को वर्तमान में सहता।।

जो जग को देता सदा, उसके पड़े अकाल।
विधि की यही विडम्बना, कैसे सकते टाल।।
कैसे सकते टाल, कर्म धर्मोचित करता।
फल कैसा हो, यह प्रारब्ध सुनिश्चित करता।।
जग को देते रहो सन्तुलन रखे विधाता।
मान और सम्मान, सुयश जग से मिल जाता।।

धन दौलत के खेल में भूली बातें खास। नर नारायण छोड़ कर मन लक्ष्मी का दास।।
मन लक्ष्मी का दास, सखी संगी न सुहाता। बन्द हुए सम्बन्ध, जुड़ा लक्ष्मी से नाता।।
राज करे, फिर होइ चमक फीकी शोहरत की। किंचित पल ही रहे चांदनी धन दौलत की।।

तीन तलाक : एक कुप्रथा का अंत

रचियता
कवि मनवीर 'मधुर'
(ओजस्वी गीतकार)

झांकते रहे जो सदा बीबियों की जिंदगी में,
अंधकार चीर के उजाला किया गया है।
बेबसी, घुटन, गम, टीस और तन्हाई,
जिंदगी से सबका निकाला किया गया है।।

प्रतिबंधित किया गया है ट्रिपल तलाक,
यानी कि गुमन का दिवाला किया गया है।
मोमिनों आज ये मलाल बड़ा' संसद में,
कैसे यूं हलाला का हलाला किया गया है।।

तलाक! तलाक!! तलाक!!! से आजादी

''तीन तलाक पर सिर्फ मुस्लिम महिलाओं की नहीं, पूरे भारत की जीत हुई है। यह सामाजिक परिवर्तन का बड़ा उदाहरण है। तीन तलाक हमारे समाज के लिए किसी कलंक से कम नहीं था। भारत ने ऐसी सामाजिक कुप्रथा पर जीत हासिल कर लिया जो आधुनिक, सभ्य और प्रगतिवादी समाज के लिए कलंक था। मुस्लिम समाज में व्याप्त मध्ययुगीन कुप्रथा यानी तीन तलाक का अंत हो गया। संसद ने मुस्लिम महिलाओं को तलाक! तलाक!! तलाक!!! से आजादी दिला दिया है।''............(संस्कार जागृति मिशन)

" सांच को आंच नहीं "

लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य, संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन

चलभाष : 09719601088

जब-जब परमात्मा सृष्टि की रचना करता है तब-तब सृष्टि को समझने के लिए परमात्मा वेदज्ञान देता है। वेद में ज्ञान कितना है और कितने प्रकार का है? विचार किया तो पता चला कि वेद में ज्ञान दो प्रकार का है- 1. सकारात्मक, 2. नकारात्मक ज्ञान। मनुष्य को जीवन में क्या करना चाहिए यह सकारात्मक पक्ष है और क्या नहीं करना चाहिए यह नकारात्मक पक्ष है। उदाहरण के तौर पर जब आप सड़क पर चलते हैं तो शासन की ओर से जगह-जगह बोर्ड लगे रहते हैं जिन पर लिखा रहता है 'कृपया अपने बायें चलें' और दूसरे पर लिखा रहता है- 'सावधानी हटी और दुर्घटना घटी'। वेद ने मनुष्य को मुक्ति, मोक्ष, आनंद, स्वर्ग आदि के निमित्त परमात्मा को जानने का उपदेश किया है और उसके लिए जिन साधनों की जरूरत है उनको बताया है। जो काम परमात्मा के जानने में सहायक है वह धर्म अर्थात् पुण्य और जो परमात्मा को जानने में रुकावट डालने वाला है वह अधर्म अर्थात पाप है। विचार करना चाहिए कि हम परमात्मा को किस प्रकार जान सकते हैं। परमात्मा हमसे दूर नहीं जिसके लिए चलने की आवश्यकता हो, अपितु वह हमारे अत्यंत निकट अर्थात् हमारे बाहर और भीतर प्रत्येक स्थान पर विद्यमान है। यदि आप कहोगे फिर हम उसे जान क्यों नहीं पाते? तो इसका उत्तर यह है कि जिस प्रकार काजल आंखों के निकट होता है परंतु आंखें सब पदार्थों को दिखती है किंतु काजल को नहीं देख पातीं। इसी प्रकार जीवात्मा संपूर्ण पदार्थों को जान सकता है परंतु अपने अति समीप परमात्मा को नहीं जान सकता और जिस प्रकार काजल को देखने के लिए दर्पण की आवश्यकता है, उसी प्रकार परमात्मा को देखने के लिए भी एक दर्पण की आवश्यकता है जो कि परमात्मा ने 'मन' के नाम से हमको दिया है। परंतु जैसे दर्पण के मलिन होने से स्वरूप का ज्ञान नहीं होता और शुद्ध होने से होता है, इसी प्रकार मन के मलिन होने पर परमात्मा का ज्ञान नहीं होता और शुद्ध होने से होता है। अत: जो वस्तु मन में अशुद्धि उत्पन्न करें उसका संग करना पाप है और जो काम मन को शुद्ध करें उनका करना धर्म है, पुण्य हैं। मन को मलिन करने वाली चमकीली वस्तुओं की इच्छा है, जिसके कारण मन कभी शुद्ध नहीं हो सकता। मनु महाराज ने मन की शुद्धि का कारण सत्य माना है, जैसा कि उन्होंने लिखा है-

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मन: सत्येन शुध्यति। विद्या तपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।।

अर्थात् जल से शरीर की शुद्धि होती है, सत्य बोलने तथा सत्याचरण करने से मन शुद्ध होता है। विद्या और तप से आत्मा की शुद्धि तथा ज्ञान से बुद्धि शुद्ध होती है। अब हमें थोड़ा सा विचार यह करना है कि जब सत्य से मन शुद्धि होता है तो हम सत्य से क्यों दूर हो गए हैं? क्या हमें यह ज्ञान ही नहीं कि सत्य ही हमारे मन को शुद्ध करने वाला है अथवा और कोई रुकावट है जो हमें सत्य से दूर रखती है। यह तो प्रत्येक मनुष्य कहता हुआ दिखाई देता है कि 'सांच को आंच नहीं' और सभी शास्त्रों में भी सत्य के संबंध में भली प्रकार लिखा हुआ है कि सत्य परमात्मा के प्रसन्न होने का कारण है। किसी को नहीं देखा कि सीधे रास्ते को भूल गया हो, अब यह तो स्पष्ट हो गया कि सत्य के गुणों से तो प्रत्येक मनुष्य विज्ञ है। परंतु कोई रुकावट ऐसी अवश्य है जिसके कारण हम सत्य से दूर जा पडे हैं। इस रुकावट का वर्णन वेदों में स्पष्ट रीति से किया गया है-

हिरण्यमेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्। तत् त्वं पूषन्नपावृणु सत्य धर्म्माय दृष्टये।।

अर्थात् चमकीली वस्तुओं की इच्छा से सत्य रूपी बर्तन का मुख ढका हुआ है। यदि तुम अपनी उन्नति करना चाहते हो तो उस पर्दा को उठा दो अर्थात् चमकीली वस्तुओं की इच्छा को छोड़ दो। चमकीली वस्तुओं की इच्छा- जिसका नाम लोभ तथा काम है।

प्रेरक प्रसंग

मेहनत का फल अवश्य मिलता है...

वंदना प्रिय आर्य
एम.ए., एम.फिल. (संस्कृत)
उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

महान वैज्ञानिक थॉमस एडिसन बहुत ही मेहनती एंव जुझारू प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। बचपन में उन्हें यह कहकर स्कूल से निकाल दिया गया कि वह मंद बुद्धि बालक है। उसी थॉमस एडिसन ने कई महत्वपूर्ण आविष्कार किये जिसमें से ''बिजली का बल्ब'' प्रमुख है। उन्होंने बल्ब का आविष्कार करने के लिए हजारों बार प्रयोग किये थे तब जाकर उन्हें सफलता मिली थी। एक बार जब वह बल्ब बनाने के लिए प्रयोग कर रहे थे तभी एक व्यक्ति ने उनसे पूछा कि आपने करीब एक हजार प्रयोग किये लेकिन आपके सारे प्रयोग असफल रहे और आपकी मेहनत बेकार हो गई। क्या आपको दु:ख नहीं होता? एडिसन ने कहा कि मैं नहीं समझता कि मेरे एक हजार प्रयोग असफल हुए हैं। मेरी मेहनत बेकार नहीं गयी क्योंकि मैंने एक हजार प्रयोग करके यह पता लगाया है कि इन एक हजार तरीकों से बल्ब नहीं बनाया जा सकता। मेरा हर प्रयोग, बल्ब बनाने की प्रक्रिया का हिस्सा है और मैं अपने प्रत्येक प्रयास के साथ एक कदम आगे बढ़ता हूँ। कोई भी सामान्य व्यक्ति होता तो वह जल्द ही हार मान लेता लेकिन थॉमस एडिसन ने अपने प्रयास जारी रखे और हार नहीं मानी। आखिरकार एडिसन की मेहनत रंग लायी और उन्होंने बल्ब का आविष्कार करके पूरी दुनिया को रोशन कर दिया। यह थॉमस एडिसन का विश्वास ही था जिसने आशा की किरण को बुझने नहीं दिया नहीं और पूरी दुनिया को बल्ब के द्वारा रोशन कर दिया। जिंदगी में किया गया कोई भी काम या मेहनत कभी बेकार नहीं जाती। हम जितनी मेहनत करते है उसका प्रतिफल हमें किसी न किसी रूप में अवश्य मिलता है, यही सत्य है। सफलता के रास्ते तभी खुलते हैं जब हम उसके करीब पहुँच जाते है।

रक्षाबंधन का पावन पर्व

यूं तो भारत में भाई-बहनों के बीच प्रेम और कर्तव्य की भूमिका किसी एक दिन की मोहताज नहीं है पर रक्षाबंधन के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व की वजह से ही यह दिन इतना महत्वपूर्ण बना है। बरसों से चला आ रहा यह त्यौहार आज भी बेहद हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

श्रावण मास के पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला यह त्योहार भाई का बहन के प्रति प्यार का प्रतीक है। रक्षाबंधन पर बहनें भाइयों की दाहिनी कलाई में राखी बांधती हैं, उनका तिलक करती हैं और उनसे अपनी रक्षा का संकल्प लेती हैं। हालांकि रक्षाबंधन की व्यापकता इससे भी कहीं ज्यादा है। राखी बांधना सिर्फ भाई-बहन के बीच का कार्यकलाप नहीं रह गया है। राखी देश की रक्षा, पर्यावरण की रक्षा, हितों की रक्षा आदि के लिए भी बांधी जाने लगी है।

''संस्कार जागृति मिशन'' की ओर से सभी भाई-बहिनों को रक्षाबंधन की हार्दिक बधाई

स्वास्थ्य चर्चा

शहद स्वास्थ्य और सौंदर्य के लिए है लाभकारी

नीति प्रिय आर्य

दुनिया भर में शहद का उपयोग सदियों से किया जा रहा है। यह मीठा तरल पदार्थ है जो मधुमक्खियों द्वारा निर्मित किया जाता है। शहद को कई देशों में अलग -अलग नाम से जाना जाता है। शहद में विटामिन, कार्बोहाइड्रेट, अमीनो एसिड, प्रोटीन और खनिज पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। जो कि सेहत कि लिए जरूरी होते हैं। शहद में ग्लूकोज पाया जाता है। साथ ही शहद में पाए जाने वाला विटामिन और शुगर शरीर के भीतर जाते ही कुछ ही समय में घुल जाता है। शहद का इस्तेमाल औषधी बनाने के साथ-साथ सौंदर्य प्रसाधन की तरह भी किया जाता है। अपने नियमित आहार में शहद को शामिल करना स्वास्थ्य और सौंदर्य संबंधित विभिन्न रोगों को रोकने और उनका इलाज करने के लिए एक सरल व प्रभावी तरीका हो सकता है। यह स्वादिष्ट प्राकृतिक शहद सफेद चीनी का एक शानदार विकल्प है। इसलिए शहद स्वास्थ्य और सौंदर्य के लिए लाभकारी है। इस माह के अंक में आपको शहद से होने वाले लाभों के बारे में बताया जा रहा है -

शहद से होने वाले दस लाभ :-

1. शहद वजन कम करने में एक अहम भूमिका निभाता है। इससे बिना किसी नुकसान के वजन को आसानी से कम किया जा सकता है। इसके लिए बस आपको सुबह खाली पेट नींबू पानी में शहद मिलाकर सेवन करना हैं।
2. शहद का इस्तेमाल बालों के लिए भी काफी अच्छा होता है। ऑलिव आयल के साथ शहद मिलाकर बालों में लगाने से बाल लंबे, घने और मुलायम हो जाते। यह बालों के झड़ने की समस्या को भी काफी हद तक रोकता है।
3. शहद को पानी में मिलाकर कुल्ले करने से मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं। शहद दांत के दर्द को दूर करने में भी मदद करता है। दांत में दर्द होने पर रूई के फोहे को शहद में भिगोकर दर्द वाली जगह पर रखने से कुछ ही देर में दांत दर्द से राहत मिलती है।
4. शहद में मौजूद एंटीबैक्टीरियल और नमी प्रदान करने वाले गुण दाग-धब्बों को दूर कर त्वचा में नई जान भर देते हैं। चेहरे की खुश्की दूर करने के लिए शहद, मलाई और बेसन का उबटन लगाना चाहिए। इससे चेहरे पर चमक आ जाती है।
5. बच्चों की खांसी दूर करने के लिए अदरक के रस में शहद मिलाकर देने से खांसी में आराम मिलता है। सूखी खांसी में भी शहद और नींबू का रस लेने से फायदा होता है।
6. जी मिचला रहा हो या फिर उल्टी आने की शिकायत हो तो शहद लेना चाहिए।
7. शहद के सेवन से कब्ज भी दूर होती है। कब्ज की शिकायद होने पर टमाटर या संतरे के रस में एक चम्मच शहद मिलाकर खाने से लाभ होता है।
8. यदि आप वजन बढ़ाना चाहते हैं तो रात में दूध में शहद डालकर पीएं।
9. मांसपेशी मजबूत करनी हो, रक्तचाप नॉर्मल करना हो तो भी शहद का सेवन लाभकारी है।
10. यदि आप थकान महसूस करते हैं तो नियमित रूप से शहद का सेवन कर इस बीमारी को दूर कर सकते हैं।

(हालांकि ये सभी घरेलू उपचार हैं फिर भी डॉक्टर से परामर्श ले लेना बेहतर होगा)

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

भरतपुर (राजस्थान) के कंजौली लाइन में आयोजित मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम कथा में कथा श्रवण करातीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष कथाव्यास श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

कंजौली में श्रीराम कथा के दौरान कथा व्यास डा.अर्चना प्रिय आर्य जी को सम्मानित करते आयोजक दम्पति।

श्रीराम कथा आयोजक श्री पदम सिंह सैनी व श्रीमती रामकली देवी जी को सम्मान पत्र भेंट करतीं मिशन की अध्यक्ष व कथा व्यास डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

कंजौली लाइन (भरतपुर) में हुई श्रीराम कथा में श्रोतागणों को व्यासपीठ से कथा श्रवण करातीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष कथा व्यास श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

कंजौली में आयोजित श्रीराम कथा में कथा व्यास श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी का स्वागत करते आयोजक दम्पति।

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम कथा का संचालन करते संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी।

भरतपुर में श्रीराम कथा के दौरान मिशन की अध्यक्ष डा0 अर्चना प्रिय आर्य जी का सम्मान करता आयोजक परिवार।

कंजौली लाइन (भरतपुर) में आयोजित श्रीराम कथा के दौरान प्रात:काल की बेला में यज्ञ कराते संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी।

कंजौली लाइन (भरतपुर) में आयोजित भगवान श्रीराम कथा में व्यासपीठ से कथा श्रवण करातीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष कथा व्यास श्रद्धेय डा0 अर्चना प्रिय आर्य जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

कंजौली लाइन में आयोजित श्रीराम कथा के दौरान संस्कार जागृति मिशन के अध्यक्ष आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी का स्वागत करते आयोजक।

गुरू पूर्णिमा के पावन पर्व पर श्रद्धेय आचार्य स्वदेश जी महाराज से आशीर्वाद लेते मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य जी।

भरतपुर में संस्कार जागृति मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य जी का पगडी व शॉल ओढ़ाकर सम्मान करते कथा आयोजक।

संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी का भरतपुर में सम्मान करते भागवताचार्य सीताराम जी व श्रीराम कथा आयोजक पदम सिंह सैनी जी।

कंजौली में आर्य प्रतिनिधि सभा भरतपुर के पदाधिकारियों व आर्य जगत के विद्वान सन्यासियों के साथ संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी व सचिव विवेक प्रिय आर्य जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

दैनिक भास्कर भरतपुर, शनिवार, 06 जुलाई, 2019

भरतपुर. प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करती हुई डॉ. अर्चना प्रिय आर्या।

राम के नहीं लेकिन रम के मंदिर बना दिएः डॉ. अर्चना

भरतपुर| कंजौली लाइन में चल रही मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम कथा के समापन पर कथावाचक संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि भगवान श्रीराम का मंदिर तो है हम नहीं बना पाए। लेकिन हम एक किमी पर रम के मंदिर स्थापित कर दिए हैं जोकि बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि रावण की कैद में रहती हुई सीता को बिना उसकी सहमति के राक्षस रावण स्पर्श नहीं कर पाया। परंतु आज देश में महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। उन्होंने कहा कि रामायण हमें त्याग, भावना, भातृ प्रेम, भक्ति और यज्ञ प्रेम सिखाती है। उन्होंने कहा कि भगवान श्री राम हमारे आदर्श हैं। हमें में भी उनके जीवन में उतारना होगा। इस अवसर पर आयोजक पदम सैनी व रामकली देवी को सम्मान पत्र भेंटकर उनका सम्मान किया गया। इस अवसर पर आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने वैदिक विधि विधान ने यज्ञ किया। इस अवसर पर विवेक प्रिय आर्य, रामरूप सैनी, ओमप्रकाश आर्य, मानसिंह आर्य, प्रकाशानंद स्वामी, सोम मुनि आदि श्रद्धालु मौजूद थे।

दैनिक भास्कर भरतपुर, गुरुवार, 04 जुलाई, 2019

अहंकार से स्वाभिमान नहीं खोनाः डॉ. अर्चना प्रिय

भरतपुर| कंजौली लाइन में चल रही श्रीराम कथा में पांचवें दिन संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्षा कथावाचक डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि अहंकार व्यक्ति का नाश करता है। इसलिए धन, पद, सौंदर्य, बल का अभिमान नहीं करना चाहिए। भरत का जीवन त्याग भाव से ओतप्रोत था; इसलिए उन्होंने अपनी मां का वचन न मानकर एक चक्रवती सम्राट के पद को स्वीकार नहीं किया और अपने भाई श्रीराम को चित्रकूट में से वापस लाने के लिए नंगे पैर पहुंचे। पिता की आज्ञा सर्वोपरि मानते श्रीराम की पादुकाओं के साथ 14 वर्ष धरती में ही सोए। इस अवसर पर आयोजक पदम सैनी, रामकली देवी सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद थे।

दैनिक भास्कर भरतपुर, मंगलवार, 02 जुलाई, 2019

मानव जीवन की आधारशिला है संस्कारः डॉ. अर्चना प्रिय

भागवत कथा सुनते श्रद्धालु।

भरतपुर| कंजौली लाइन में चल रही मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम कथा में तीसरे दिन संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष कथावाचक डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि मानव जीवन की आधारशिला संस्कार है। महाराजा दशरथ ने भगवान श्री राम के सभी संस्कार पूर्ण किए थे। लेकिन आज का समाज इस ओर कोई ध्यान ही नहीं दे रहा है। इसी कारण आज हमारे घर टूट रहे हैं। मनुष्य को संस्कार ही ही मर्यादित बनाते हैं। उन्होंने बताया कि महाराजा दशरथ के शासनकाल में गुरुकुलीय शिक्षा का चलन था। भगवान श्रीराम सहित चारों भाईयों की शिक्षा दीक्षा महर्षि वशिष्ठ के गुरुकुल में हुई थी, जहां उन्होंने वेद, शास्त्र आदि ग्रंथों का अध्ययन किया था। आयोजक पदम सिंह व रामकली देवी का कथा व्यास डॉ. अर्चना प्रिय का स्वागत किया गया। यज्ञ आचार्य सत्यप्रिय आर्य द्वारा कराया गया। कथा में रामरूप सैनी, विवेकप्रिय आर्य, ओमप्रकाश आर्य, मान सिंह आर्य, पीतम सिंह, राजवीर वैदिक, प्रकाशानंद, धर्मेंद्र सैनी, सुभाष राही, कीर्ति आर्य मौजूद थे।

दैनिक भास्कर **भरतपुर** भरतपुर, रविवार, 30 जून, 2019

भगवान श्री राम का जन्म यज्ञ के माध्यम से हुआः डॉ. अर्चना प्रिय

भास्कर संवाददाता|भरतपुर

कंजौली लाइन स्थित ग्राम कंजौली में श्रीराम कथा का शुभारंभ पदमसिंह सैनी व रामकली के सहयोग से किया गया। कथा वाचक आचार्या डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि भगवान श्री राम का जन्म ही यज्ञ के द्वारा हुआ था। उनके जन्म के लिए महाराज दशरथ ने श्रृंग ऋषि के ब्रह्मत्व में अर्थ वेद के मंत्रों से पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था। श्री राम का पूरा जीवन मर्यादा से युक्त था इसलिए तो आज लगभग साढे नौ लाख वर्ष बाद भी उन्हें याद करते हैं। आज लोग श्रीराम की जय-जयकार तो करते हैं तभी तो आज भाई-भाई आपस में लड़ रहे हैं। आज भी यदि माताएं कौशल्या की तरह तपस्वी हो तो फिर से राम हमारे घरों में पैदा हो जाएंगे। इससे पूर्व सुबह कलश यात्रा निकाली गई। इस अवसर पर आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने वैदिक विधि विधान से यज्ञ कराया। इस अवसर पर ओमप्रकाश आर्य, मानसिंह, राम स्वरुप सैनी, सत्यदेव आर्य, विवेक प्रिय आर्य, कीर्ति आर्य, सुभाष राही, हरिशचंद्र, धर्मेंद्र सैनी आदि मौजूद थे।

भरतपुर। ग्राम कंजौली में श्रीराम कथा से पूर्व कर

दैनिक भास्कर भरतपुर, बुधवार, 03 जुलाई, 2019

जीवन में संगत का बड़ा असर, मंथरा की संगत से कैकई की बुद्धि बदल गई थीः डॉ. अर्चना प्रिय

भरतपुर। कंजौली लाइन में चल रही मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम कथा में चौथे दिन संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्षा कथा वाचक डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने कहा कि जीवन को महान बनाने में संगति का महत्व बहुत होता है। मंथरा ने अपनी संगति से ही कैकई की बुद्धि परिवर्तन कर दी थी और भगवान श्रीराम को चौदह वर्ष का वनवास दे दिया। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीराम ने अपने पिता के वचन को सुनते ही वनवास के लिए निकल गए थे। आज बच्चे अपने माता-पिता का कहना नहीं मानते हैं और उनकी सेवा नहीं करते हैं। उनके लिए रामायण यह संदेश देती है इसलिए भगवान राम के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में में उतारना चाहिए। उन्होंने कहा कि महाराजा दशरथ ने भगवान श्रीराम के सभी संस्कार पूर्ण किए थे लेकिन आज का समाज इस और कोई ध्यान नहीं दे रहा है। इसी कारण आज हमारे घर टूट रहे हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य को संस्कार ही मर्यादित बनाते हैं। उन्होंने श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारियों, राम के वन गमन के प्रसंग सुनाए। श्रीराम के वन गमन को सुन श्रद्धालु भावविभार हो गए।

संस्कार जागृति मिशन

!! ओ३म् !!

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

'संस्कार जागृति मिशन' एक ऐसा प्रयास है जो भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

घरों में यज्ञ व बच्चों के संस्कार करायें

बच्चों के जन्मदिन, बुजर्गों की पुण्यतिथि व त्यौहारों पर अपने घरों पर दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म 'यज्ञ' करायें तथा अपने बच्चों के सभी संस्कार करा कर उन्हें संस्कारवान बनायें।

वैदिक रीति से संस्कार व यज्ञ करवाने के लिए सम्पर्क करें

सम्पर्क सूत्र : 09719910557, 09719601088, 09058860992, 08218692727

ई-मेल : sanskarjagratimission@gmail.com

SanskarJagratiMission

Sanskar Jagrati TV

धार्मिक खबर, भजन, प्रवचन, योग, संस्कार समागम तथा संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां देखने को YouTube पर संस्कार जागृति टीवी चेनल को सबस्काइब करें।